om 1 Delhi Final 1_Page 1 and 2 18/03/2015 10:57 Page 5

जीवन को देखने का ढंग बदलें...

जीवन-सत्य की खोज में जो बड़ी से बड़ी कठिनाई हो सकती है, वह है जीवन के प्रति असम्मान का भाव। और हम सबके भीतर जीवन के प्रति असम्मान का भाव है। और यह बात उलटी लगेगी और समझने में थोड़ी मुश्किल पड़ेगी कि तथाकथित धर्मों ने ही हमें जीवन के प्रति असम्मान से भर दिया है, जबकि वास्तविक धर्म हमें जीवन के प्रति सम्मान से भरेगा।

क्योंकि परमात्मा जीवन में ही छिपा है। जीवन उसका ही वस्त्र है, उसका ही आच्छादन है। जीवन उसकी ही श्वास है। और अगर जीवन के प्रति असम्मान का भाव है, तो परमात्मा को खोजना असंभव है। क्योंकि उस सम्मान से ही तो उसमें प्रवेश का द्वार मिलेगा। असम्मान से तो हमारी पीठ उसकी तरफ हो जाती है।

पर ऐसी उलझन हो गई है कि धर्म कहते हैं कि परमात्मा को खोजो। और धर्म यह भी कहते हैं कि परमात्मा जीवन के कण-कण में छिपा है। लेकिन परमात्मा को खोजने की बात, जो रुग्ण चित्त लोग हैं, वे समझते हैं, जैसे जीवन का निषेध करके खोजना है। जैसे परमात्मा की खोज जीवन का विरोध है। जैसे परमात्मा को पाना है तो जीवन को छोड़ना होगा।

अगर यह सच है कि परमात्मा को पाने के लिए जीवन को छोड़ना होगा, तो फिर जीवन का सम्मान नहीं हो सकता; जीवन की निंदा होगी, अपमान होगा। और जीवन का अपमान होगा तो जीवन का जो परम-रहस्य है, उसका सम्मान कैसे हो सकता है?

कृष्ण तो जीवन के प्रति सम्मान से भरे हैं, जीसस तो जीवन के प्रति सम्मान से भरे हैं, बुद्ध तो जीवन के प्रति सम्मान से भरे हैं, लेकिन उनके अनुयायिओं का बड़ा वर्ग जीवन के प्रति अपमान से भरा है। इसका कारण बुद्ध, कृष्ण या क्राइस्ट की शिक्षाओं में नहीं है। इसका कारण अनुयायिओं की समझ में है।

क्योंकि वे सभी कहते हैं कि परम-सत्य को खोजो। हम भी उसे खोजना चाहते हैं। लेकिन जब भी हम उसकी खोज का विचार करते हैं, तभी हमें लगता है कि हमारा जो आज का क्षण, अभी का जो जीवन है, उसे छोड़ना पड़े, तभी उसकी खोज हो सके। इससे हटना पड़े, इसे नष्ट करना पड़े, तभी उसकी खोज हो सके। इसलिए नहीं कि उसकी खोज के लिए इससे हटना ज़रूरी है, बल्कि सच्चाई यह है कि हम इससे इतने ऊब गए हैं, और परेशान हो गए हैं, और हम इसमें इतने दु:खी और इतने दीन हो गए हैं कि जब भी हमें कोई मौका मिले, इसे छोड़ने और तोड़ने का, तो हम तैयार हैं। कोई भी बहाना मिले तो हम जीवन को नष्ट करने को तैयार हैं। हम आत्मघाती हैं, हम रुग्ण हैं। और ये रुग्ण लोग इकट्ठे हो जाते हैं, और ये सारी जीवन की परिभाषा बदल देते हैं, सारा ढंग बदल देते हैं। और ये पूरी व्यवस्था को उलटा कर देते हैं।

धर्म की तरफ पैथोलॉजिकल, रुग्ण चित्त लोग बहुत तीव्रता से उत्सुक होते हैं। उनकी उत्सुकता का कारण है। क्योंकि वे जीवन के तो विरोध में हैं। क्योंकि जीवन से तो उनको कोई सुख और शांति नहीं मिली। इसका

कारण यह नहीं है कि जीवन में सुख और शांति नहीं है। इसका कारण यह है कि उनका जो ढंग था जीवन से सुख और शांति पाने का, वह गलत था। तो वे जीवन के प्रति विरोध से भर गए हैं। और जब भी उन्हें कोई शिक्षक मिल जाता है, जो किसी और बड़े जीवन की तरफ इशारा करता है, तभी वे तत्काल यह निर्णय बना लेते हैं कि इस जीवन में ही पाप है, इस जीवन में ही दु:ख है। इसको छोड़ेंगे तो वह परम-जीवन मिलेगा।

जीवन में दु:ख नहीं है, जीवन को देखने के ढंग में दु:ख है। और अगर यही ढंग लेकर तुम परम-जीवन में भी प्रवेश कर गए, तो वहां भी दु:ख पाओगे। वह ढंग तुम्हारे साथ है। तुम कहां हो यह सवाल नहीं है। तुम जहां भी रहोगे, वह ढंग तुम्हारे साथ रहेगा। तुम जहां भी जाओगे, तुम्हारी आंख तुम्हारे साथ रहेगी। तुम्हें परमात्मा भी मिल जाए, तो तुम उससे भी दु:खी होने वाले हो! तुम सुखी हो नहीं सकते, तुम्हारा जो ढंग है उसको बिना बदले। लेकिन ढंग तुम बदलना नहीं चाहते, तुम परिस्थिति बदलने को उत्सुक हो जाते हो। तुम जीवन की निंदा करने में रस लेते हो। खुद गलत हो, यह तुम्हें सोचना मुश्किल हो जाता है।

यह जो निंदकों का एक समूह है, यह जीवन को नुकसान तो पहुंचा देता है, लेकिन परमात्मा की तरफ एक भी कदम बढ़ाने में सहायता नहीं कर पाता।

एक बात समझ लेनी ज़रूरी है कि अगर कोई परम-जीवन भी है, तो इस जीवन की ही गहराई का नाम है। अगर कोई पार का जीवन भी है, तो भी इसी जीवन की सीढ़ियों से होकर वह रास्ता जाता है। यह जीवन तुम्हारा दुश्मन नहीं है। यह जीवन तुम्हारा सहयोगी है, साथी है, संगी है। और अगर इस जीवन से तुम्हें कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ता, तो तुम अपने देखने के ढंग को बदलना। तुम अपने देखने की वृत्ति को बदलना। लेकिन कोई भी आदमी अपने को बदलने को तैयार नहीं!

मैं तो इतना चकित होता हूँ कि जो लोग कहते भी हैं कि हम स्वयं को बदलने को तैयार हैं, वे भी स्वयं को बदलने को तैयार नहीं होते, कहते ही हैं। उनकी उत्सुकता भी होती है कि सब बदल जाएं, और वे न बदलें। क्योंकि खुद को बदलना-अहंकार को बड़ी चोट लगती है, बहुत पीड़ा होती है।

दु:खी आदमी भी यदि यहां आता है तो उसे इसका खयाल ही नहीं कि वह किसलिए आया हुआ है! वह किसलिए आया हुआ है? अपने को बदलने!

आप सारे लोगों की चिंता के लिए यहां आए हो? आपको किसने ठेका दिया, सबकी चिंता का? आपके पास बहुत समय मालूम पड़ता है, बहुत शक्ति मालूम पड़ती है। अपना जीवन आप दूसरों के लिए चुका रहे हो कि कौन आदमी क्या कर रहा है। क्या प्रयोजन है? आपकी चिंता का क्या कारण है?आप कौन हैं?

लेकिन आप आए थे यहां अपने को बदलने को और यहां आप फिक्र में पड़ जाते हो किसी दूसरे को बदलने की! असल में आप अपने को बदलने आए ही नहीं हो, इसीलिए यह फिक्र पैदा होती है। आपका खयाल गलत था कि आप अपने को बदलने आए हो। आपने अपने को धोखा दिया। आप चाहते तो सारी दुनिया को बदलना हो, आप तो जैसे हो, उससे आप रत्ती भर हटना नहीं चाहते। और फिर आप चाहते हो कि आपका दु:ख समाप्त हो जाए, आपकी पीड़ा समाप्त हो जाए! आप जैसे हो, वैसे ही रह कर दु:ख समाप्त न होगा। सवाल तो यह है की हम कहीं भी जाते हैं तो अपने को बदलें नहीं बल्कि सामने वालों को बदलने का भाव होता है। यही समस्या सभी की है। हम जो होना चाहते वह हो नहीं पाते जो होना नहीं है उनमें हमारी शक्ति व्यय कर देते है। जीवन में सुख हमें चाहिए लेकिन बदलें दूसरे। यह विरोध ही हमें दु:ख की जंजीरों से मुक्त होने नहीं देता।

-ब्र.कु.शीतल।

रेवाड़ी। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण के बाद नारे लगाते हुए ब्र.कु. मधु। साथ हैं निर्मला कोसला, मंजू सोमाणी, इंजीनियरिंग कॉलेज व अन्य।

भादरा-राज.। सेवाकेन्द्र की सिल्वर ज्युबली कार्यक्रम में मंचासीन हैं जिला प्रमुख शोभाजी, ब्र.कु. गीता,मा.आबू, श्यामानंद जी महाराज, विदूषी दत्त शाखी जी, ब्र.कु. कमल , ब्र.कु.विजय अन्य।

अंबेडकर नगर-अकबरपुर। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए अपर जिला अधिकारी राममूर्ति मिश्रा, ब्र.कु.सोमा, ब्र.कु.सुजीता, ब्र.कु.विपिन व अन्य।

अमृतसर-फगवाड़ा। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान विधायक सोम प्रकाश जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राज, ब्र.कु. आदर्श तथा अन्य।

औरंगाबाद-उ.प्र.। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान मंच पर उपस्थित हैं विधायक भोलाजी, पूर्व विधायक विरेन्द्र सिरोही, किसान मोर्चा संघ अध्यक्ष धुलीचन्द जी, ब्र.कु. राजश्री,दिल्ली व अन्य।

अयोध्या-उ.प्र.। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर शिव का ध्वज फहराते हुए ब्र.कु. मुकेश। साथ हैं महन्त श्री जन्मेजय शरण जी महाराज एवं संतों की टोली।

बड़हलगंज-गोरखपुर(उ.प्र.)। नवनिर्मित भवन के उद्घाटन कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित हैं विधायक राजेश त्रिपाठी, ब्र.कु. सुरेन्द्र बहन, ब्र.कु. दीपेन्द्र, ब्र.कु. निर्मला, ब्र.कु. रंजना तथा अन्य।

ओडिशा-तुषरा। महिला समिति की अध्यक्षा मंजू केड़ीया व अधिवक्ता बी.एल. केड़ीया को ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमित्रा। साथ हैं डॉ अभिमन्यु।